

प्रो. रामहर्ष सिंह

Prof. Ram Harsh Singh



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

प्रो. रामहर्ष सिंह

प्रो. रामहर्ष सिंह, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय में जीवनकालिक लब्धप्रतिष्ठ प्रोफेसर हैं। आपने आयुर्वेद के पुनरोत्थान एवं विकास और इसकी वैज्ञानिक वैधता में सराहनीय भूमिका निभाई है, जिससे आयुर्वेद को भारत में मुख्यधारा में लाने और इसकी वैश्वीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई है। आपके कार्य से समसामयिक आयुर्वेद में ट्रेंड स्थापित करने में सहयोग मिला है।

2. आपका जन्म 10 जनवरी, 1942 में हुआ था। आपने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से 1961 में आयुर्वेद, मेडिसन और सर्जरी में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की, 1969 में पी.एच.डी. और 1982 में डी. लिट्ट की। आपने 1964 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय में कार्यभार संभाला और वहां प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष और फरवरी 2003 तक संकायाध्यक्ष के पद पर रह कर 40 वर्ष तक अपनी सेवाएं प्रदान कीं। तत्पश्चात् आपने जोधपुर के राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय में उसके प्रथम और संस्थापक कुलपति (2003–2006) के रुप में कार्यभार ग्रहण किया जहां आपने आयुर्वेद संबंधी उच्चतर शिक्षा की एक नया आदर्श संस्था स्थापित करने में सराहनीय भूमिका निभाई। आपके द्वारा 20 पुस्तकें एवं 200 शोध–पत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं। आप बहुत सी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय मंडल में शामिल हैं। आप राष्ट्रीय विज्ञान इतिहास आयोग, आई.एन.एस.ए. के सदस्य हैं।

3. आप 'नेशनल अकैडमी ऑफ इंडियन मेडिसिन' में फेलो हैं और आल इंडिया आयुर्वेद अकैडमी के ज्वैल सदस्य हैं। आप वॉनकांग डिजिटल यूनिवर्सिटी, रिपब्लिक ऑफ कोरिया में अध्यक्ष प्रोफेसर और माउन्ट मैडोना इंस्टिट्यूट ऑफ क्रिएटिव साइंस एडं आर्टस, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में अतिथि प्रोफेसर रहे हैं। आप मानद प्रोफेसर के रुप में कार्य करते रहे हैं और अभी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में जीवन कालिक लब्धप्रतिष्ठ प्रोफेसर हैं। आप सारनाथ में केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय में ऐडजन्क्ट प्रोफेसर हैं। आपको आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत आर.ए.वी. द्वारा आयुर्वेद गुरू के रूप में पदनामित किया गया है तथा आप सी.सी.आर.ए.एस. के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष (2012–2015) रहे हैं। आप भारत सरकार द्वारा गठित आयुष क्षेत्र की नवाचार परिषद के अध्यक्ष रहे हैं।

4. आप वैज्ञानिक प्रकृति वाली प्रतिष्ठित क्लासिकल तर्ज पर आयुर्वेदिक चिकित्सा कार्य करने वाले एक अति लोकप्रिय आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। आप एक सफल और बहुत लोकप्रिय अध्यापक हैं और अपने विशेषीकरण के क्षेत्र में शोधकर्ता हैं तथा आपने विभिन्न पाठ्य पुस्तकों की रचना की है और भारत तथा विदेशों में प्रकाशित दर्जनों अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों हेतु अध्याय लिख चुके हैं। आप प्रमाण आधारित चिकित्सा प्रणाली के रुप में वैज्ञानिकता की तर्ज पर आयुर्वेद के पुनःत्थान और विकास के कार्य में गंभीरता से जुटे हुए हैं और आपने आयुष क्षेत्र में शैक्षणिक सुधार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय सहयोग दिया है। आपका अनुसंधान क्षेत्र आयुर्वेदिक भेषजों और चिकित्सा–विज्ञान, विशेषकर रसायन चिकित्सा–विज्ञान संबंधी सुरक्षा और इसकी प्रभावोत्पादकता के मूल्यांकन के प्रयासों वाले मानसिक स्वास्थ्य सहित दीर्घकालिक रोग प्रबधंन और जराचिकित्सा स्वास्थ्य देखभाल रहा है।

5. आपको भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठित त्रिगुण अवार्ड (2015) और राम नारायण शर्मा राष्ट्रीय अनुसंधान अवार्ड (2005), हरीओम आश्रम अवार्ड, ऐशियन मेडिसिन के आई.ए.एस.टी.ए.एम. अवार्ड (2005), ऐम्स लाइफ टाइम एचिवमेंट अवार्ड और कस्तुरबा ओरेशन अवार्ड, इंडियन साइंस कांग्रेस से प्लैटिनम जुबली ओरेशन अवार्ड (2002) और बनारस हिंदू विश्व विद्यालय के विशिष्ट विद्यार्थी पुरस्कार (2008) से विभूषित किया गया है। विश्व स्तर पर आयुर्वेद का प्रचार करने लिए आपने पूरे विश्व का व्यापक दौरा किया है।

Prof. Ram Harsh Singh

Prof. Ram Harsh Singh, life time Distinguished Professor in Faculty of Ayurveda at Banaras Hindu University, has played commendable role in revival and development of Ayurveda and its scientific validation which has accelerated the process of its mainstreaming in India and its globalization. His work has helped setting trends in Contemporary Ayurveda.

2. Born on 10 January, 1942, Prof Singh graduated in Ayurveda, Medicine and Surgery from Banaras Hindu University in 1961, did Ph.D in 1969 and D.Litt. in 1982. He joined the Faculty of Ayurveda at Banaras Hindu University in 1964 and served there for 40 years in the capacity of Professor, Head of the Dept. and Dean of the Faculty till Feb. 2003 after which he joined the Rajasthan Ayurved University of Jodhpur as its First and Founder Vice Chancellor (2003-2006), where he played a commendable role to establish a new role model institution of higher learning in Ayurved. He has published 20 books and 200 research papers in National and International Journals. He is on the Editorial board of several National and International Journals. He is a Member of National Commission on History of Science, INSA.

3. Prof. Singh is Fellow of National Academy of Indian Medicine and is a Jewel Member of All India Ayurveda Academy. He has been the Chair Professor at Wonkwang Digital University, Republic of Korea and a Visiting Professor at Mount Madonna Institute of Creative Science and Arts, USA. He has been working as Emeritus Professor and now is the Life-time Distinguished Professor at Banaras Hindu University. He is Adjunct Professor at Central University of Tibetan Studies at Sarnath. He is designated as Ayurved Guru by RAV under the Ministry of AYUSH, Govt. of India and has been the Chairman of the Scientific Advisory Board (2012-2015) of CCRAS. He has been the Chairman of AYUSH sector Innovation Council constituted by Govt. of India.

4. Prof. Singh is an extremely popular Ayurvedic Physician practicing Ayurvedic medicine on classical lines with scientific temper. He is a successful and extremely popular teacher and a researcher in his field of specialization and has produced several text books and contributed chapters in over a dozen important books published in India and abroad. He has been seriously engaged in revival and development of Ayurved on scientific lines as an evidence-based system of Medicine and has extended commendable help at National level in educational reform in AYUSH sector. His research interest has been the chronic disease management and Geriatric health care including Mental health with attempts to evaluate the safety and efficacy of Ayurvedic drugs and therapies specially Rasayana Therapy.

5. Prof. Singh is the recipient of the prestigious Triguna Award (2015) and Ram Narayan Sharma National Research Award (2005) by HE the President of India, Hari Om Ashram Award, IASTAM Award (2005) of Asian Medicine, Life-time achievement Award of AIIMS and Kasturba Oration Award, Platinum Jubilee Oration Award of Indian Science Congress (2002) and Distinguished Alumnus Award of Banaras Hindu University (2008). He has widely travelled all over the world to promote Ayurved globally.